

क. सत्य जिसपर सवाल उठे:

❖ उत्पीड़न का समय।

- उत्पीड़न की अवधि की घोषणा तीन अलग-अलग तरीकों से की जाती है। “एक समय और समयों, और आधे समय तक” (दैनियेल 7:25; 12:7; प्रकाशितवाक्य 12:14) सभी अभिव्यक्तियाँ एक ही अवधि दर्शाती हैं: 1,260 दिन।
- "वर्ष के लिए दिन" (यहेजकेल 4:6; गिनती 14:34) के सिद्धांत के तहत, उत्पीड़न की यह अवधि इतिहास के 1,260 वर्षों तक फैली हुई है: 538 से 1798 तक।
- जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, परमेश्वर ने वफादार कलीसिया की मदद के लिए एक जगह तैयार की: जंगल, यानी, कम आबादी वाले स्थान (प्रकाशितवाक्य 12:6, 14)।
- कठिनाइयों और उत्पीड़न के समय में, वफादार विश्वासी परमेश्वर के प्रेम और देखभाल में शरण लेते हुए, सच्चाई की रक्षा में मजबूती से खड़े रहे (भजन संहिता 46:1-3)।

❖ अनुसरण में निष्ठा।

- एक बार जब रोमन कलीसिया को राजनीतिक शक्ति प्राप्त हो गई, तो उसने अपनी शक्ति का उपयोग यह मांग करने के लिए करना शुरू कर दिया कि हर कोई उसके धार्मिक उपदेशों का पालन करे, जिनमें से कई विकृत हो चुके थे।
- जनता को उसकी सत्ता के खिलाफ विद्रोह करने से रोकने के लिए, उसने उनसे सबसे कीमती चीज़ ले ली: परमेश्वर का वचन।
- लेकिन वह इसे पूरी तरह नष्ट नहीं कर सकी। वफादार लोग खड़े हुए, जिन्होंने बाइबल की शिक्षाओं द्वारा निर्देशित और यहूदा की सलाह का पालन करते हुए, अपने विश्वास की रक्षा के लिए जोरदार लड़ाई लड़ी (यहूदा 1:3)।

ख. सत्य की रक्षा:

❖ बाइबल साझा करना: वाल्डेंसेस।

- पीटर वाल्डो (1140-1218), एक धनी फ्रांसीसी व्यापारी, जिसने यीशु मसीह का प्रचार करने के लिए अपनी संपत्ति का त्याग कर दिया, ने "ल्योन के गरीब" आंदोलन की स्थापना की, जिसे "वाल्डेंसेस" के नाम से जाना जाता है।
- वाल्डेंसेस की विशेषता क्या थी?
 - (1) वे सबसे पहले बाइबल को अपनी भाषा में उपलब्ध कराने वाले पहले व्यक्ति थे (उस समय तक, यह केवल लैटिन, यूनानी या इब्रानी में ही उपलब्ध थी)।
 - (2) चूँकि यह एक वर्जित पुस्तक थी, इसलिए उन्होंने इसकी गुफाओं में बैठकर नकल बनायीं, पोप के लोगों से छिपकर, जिन्होंने उसे जप्त कर लिया था।
 - (3) वे हमेशा अपने साथ बाइबल के अंश रखते थे, जिसे उचित समय पर वे दूसरों के साथ साझा करते थे, जिससे उन्हें प्रभु में आशा और प्रोत्साहन मिलता था।
 - (4) उन्होंने बाइबल की उन सच्चाइयों को सदियों तक सुरक्षित रखा जिन्हें वे जानते थे। वे अपनी निष्ठा और भक्ति के लिए जाने जाते थे।
 - (5) फ्रांस के दक्षिण और इटली के उत्तर, पीडमोंट, दोनों में पूरे गाँवों को परिवर्तित कर दिया गया।
 - (6) इनमें से अधिकांश गाँवों को पोपशाही द्वारा तहस-नहस कर दिया गया और उनके निवासियों का नरसंहार किया गया।

❖ सुधार का सितारा: जॉन वाईक्लिफ।

- जॉन वाईक्लिफ (1324-1384) ने अपना अधिकांश जीवन बाइबल का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए समर्पित कर दिया। किस बात ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया? दो कारण: मसीह ने उसे वचन के माध्यम से बदल दिया था; और वह मसीह के प्रेम को दूसरों के साथ बाँटना चाहता था।
- निःसंदेह, इससे उसका आधिकारिक कलीसिया के साथ टकराव हुआ। इंग्लैंड में उच्च अधिकारियों के साथ अपने संपर्कों के कारण, जॉन कलीसिया के हाथों मृत्यु से बच गया।

- 1428 में सुधारक के अवशेषों को जला दिया गया और उसकी राख को नदी में फेंक दिया गया। उसकी बिखरी हुई राख उसकी विरासत का प्रतीक बन गई।
- जॉन वाईक्लिफ ने सच्चाई की जो छोटी सी रोशनी जलाई, वह बोहेमिया तक पहुंची, जहाँ जॉन हस ने उसकी विरासत संभाली। इस तरह, सच्चाई ने सुधार की शुरुआत तक अपना रास्ता बना लिया। दिन उजला होने लगा था।

❖ विश्वास से दृढ़ हुए: जॉन हस और अन्य।

- जॉन वाईक्लिफ के बाद, अन्य सुधारक उभरे:
 - (1) जॉन हस (1370-1415)
 - (2) जेरोम (1360-1416)
 - (3) टिंडेल (1494-1536)
 - (4) ह्यूग लैटिमर (1490-1555)
- किस चीज़ ने उन्हें अपने सुधारों को आगे बढ़ाने और समस्याओं और मृत्यु का सामना करने का साहस दिया?
 - (1) वे मसीह की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते थे
 - (2) मसीह की शक्ति उनके लिए परीक्षाओं पर विजय पाने के लिए पर्याप्त थी
 - (3) न्हें मसीह के कष्टों में भाग लेने में खुशी मिलती थी
 - (4) उसकी वफ़ादारी दुनिया के लिए एक शक्तिशाली गवाही थी
 - (5) वर्तमान से परे, गौरवशाली भविष्य की ओर देखते थे
 - (6) वे जानते थे कि मृत्यु एक पराजित शत्रु है
 - (7) वे परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ता से कायम रहे
- जॉन हस को कैद कर लिया गया और अंततः उसे खंभे से बाँधकर जला दिया गया। जेल से उसने लिखा: “परमेश्वर मुझ पर कितना दयालु रहा है, और उसने मुझे कितनी प्रशंसनीयता से बनाए रखा है।”
- जिस प्रकार परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं ने अतीत में उसके लोगों को सहारा दिया था, उसी प्रकार वे आज भी हमें कायम रखती हैं।